Gh – यदि कोई इन छोटे बच्चों में से किसी एक को ठोकर खिलाता
है मत्ती १८:६-१४; मरकुस ९:३८-५०; लूका ९:४९-५० | 1

– Save This Page as a PDF–

यदि कोई इन छोटे बच्चों में से किसी एक को ठोकर खिलाता है

मत्ती १८:६-१४; मरकुस ९:३८-५०; लूका ९:४९-५०

खुदाई: मरकुस ९:३८-४१ (मरकुस ९:१८ देखें) के बारे में क्या विडंबना है? “यीशु के नाम पर” कुछ करने का क्या मतलब है? किसी बच्चे से पाप करवाना इतना गंभीर अपराध क्यों है? हालाँकि बुराई अपरिहार्य है, फिर भी हम दूसरों के आध्यात्मिक कल्याण की देखभाल करने के लिए कैसे जिम्मेदार हैं? मत्ती १८:१२-१४ में मसीहा का दृष्टान्त छोटों के प्रति परमेश्वर के रवैये के बारे में क्या सिखाता है? भटकती भेड़ों की ओर? प्रभु कौन सी चार बातें कहते हैं जो बेहतर होंगी? इस आलंकारिक भाषा का उपयोग करने में उनका उद्देश्य क्या है?

चिंतन: आखिरी बार कब आपने किसी जरूरतमंद को एक कप ठंडा पानी दिया था? आपका इनाम कहाँ होगा? आपके जीवन में ऐसा कौन सा क्षेत्र हो सकता है जो दूसरों के लिए समस्याएँ पैदा करता हो? आप इसके बारे में क्या करेंगे? आपने कब उस भेड़ की तरह महसूस किया है जो भटक गई है? प्रभु ने आपको वापस कैसे पाया? भटकने वालों के प्रति आपके दृष्टिकोण में क्या बदलाव की आवश्यकता है? कमज़ोरों की ओर? शक्तिहीन?

पिछली फ़ाइल में, पाठ बच्चों जैसा होना था; इस फ़ाइल का पाठ उन लोगों को प्राप्त करना है जो बच्चों जैसे हैं। सबसे महान होने का दावा करने पर डांटे जाने के बाद, शिष्य विषय बदलने की कोशिश करते हैं। लेकिन समस्या वही थी, रुतबे की समस्या। पिछला अनुभाग स्वयं शिष्यों की स्थिति से संबंधित है, लेकिन यह अनुभाग दूसरों के संबंध में शिष्यों की स्थिति से संबंधित है।

“गुरु,” युहन्ना ने कहा, “हमने किसी को आपके नाम पर राक्षसों को निकालते देखा और हमने उसे रुकने के लिए कहा, क्योंकि वह हम में से नहीं था” (मरकुस ९:३८: ल्यूक ९:४९)। यह अहंकार का स्पष्ट उदाहरण है। वह हममें से एक नहीं है, अर्थात बारह प्रेरितों का हिस्सा नहीं है। जिस व्यक्ति का वे उल्लेख कर रहे थे वह शायद बप्तिजक युहन्ना का शिष्य था, जो विश्वास के द्वारा मसीह के पास आया था। लेकिन वह आंतरिक मंडली का सदस्य नहीं था! शिष्यों को इस बात से चिढ़ थी कि भले ही युहन्ना का यह शिष्य उनमें से एक नहीं था, फिर भी वह इसमें सफल हो रहा था! और जिस बात ने मामले को और भी बदतर बना दिया वह यह था कि उनमें से नौ को निस्संदेह उस संबंध में अपनी विफलता याद थी (देखें Dd– यीशु ने एक राक्षस ग्रस्त लड़के को ठीक किया)।

Gh – यदि कोई इन छोटे बच्चों में से किसी एक को ठोकर खिलाता
है मत्ती १८:६-१४; मरकुस ९:३८-५०; लूका ९:४९-५० | 2

एक बार फिर मसीहा ने उन्हें डांटा। यीशु ने कहा, उसे मत रोको। क्योंकि जो कोई मेरे नाम पर चमत्कार करता है, वह अगले क्षण मेरे विषय में कुछ भी बुरा नहीं कह सकता (मरकुस ९:३९), क्योंकि जो कोई हमारे विरुद्ध नहीं है वह हमारे पक्ष में है (मरकुस ९:४०; लूका ९:५०)। यदि कोई येशुआ के लिए, उसके नाम पर काम कर रहा है (मरकुस ९:३८), तो वह व्यक्ति उसी समय उसके खिलाफ काम नहीं कर सकता। इतना ही नहीं, वह उनसे कहता है कि कोई भी बारह प्रेरितों में से एक हुए बिना भी परमेश्वर के लिए महान कार्य पूरा कर सकता है। यदि मसीहाई आंदोलन को बढ़ाना है, तो मूल बारह के बाहर अन्य लोगों को शामिल करने की आवश्यकता है। फिर मास्टर ऊपर बताए गए सिद्धांत का एक ठोस उदाहरण देते हैं। मैं तुम से सच कहता हूं, जो कोई तुम्हें मेरे नाम से एक कटोरा पानी इसलिये पिलाएगा कि तुम मेरे हो, वह अपना प्रतिफल न खोएगा (मरकुस ९:४१)। मसीहा के अनुयायियों में से किसी एक को एक कप पानी देना स्वयं मसीह को देने के समान है। यहां तक कि सबसे विनम्र कार्यों को भी पुरस्कृत किया जाएगा, चमत्कार करना आवश्यक नहीं है।

आगे येशुआ उसी सत्य का नकारात्मक पक्ष प्रस्तुत करता है: जब कोई व्यक्ति किसी आस्तिक के साथ दुर्व्यवहार करता है तो वह व्यक्ति प्रभु के साथ दुर्व्यवहार करता है। फिर वह एक ठोस उदाहरण देता है: जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं, किसी को ठोकर खिलाए, उसके लिए भला होता, कि उसके गले में भारी चक्की का पाट लटकाया जाता, और वह गहरे समुद्र में डुबा दिया जाता (मती १८: ६; मरकुस ९:४२ एन ए एस बी)! ठोकर खाने (ग्रीक: स्कैंडालिज़ो) का शाब्दिक अर्थ है गिराना, और इसलिए मसीह किसी भी तरह से विश्वासियों को लुभाने, फँसाने या प्रभावित करने की बात कर रहा है जो उन्हें पाप करने के लिए प्रेरित करेगा या उनके लिए पाप करना आसान बना देगा। ये छोटे लोग जो मुझ पर विश्वास करते हैं, यह वाक्यांश यह स्पष्ट करता है कि उसके मन में मती १८:३-५ के संदर्भ में वर्णित बच्चे हैं। इस सशक्त चित्रण ने भीड़ को चौंका दिया होगा। चक्की का पाट एक भारी गोल पत्थर होता था जिसे आमतौर पर अनाज को पीसकर आटा बनाने के लिए बोझ उठाने वाले जानवर द्वारा खींचा जाता था – इतना बड़ा कि उसे मोड़ने के लिए पशु-शक्ति की आवश्यकता होती थी। यह दिखाने के लिए कोई सबूत नहीं है कि यहूदियों ने कभी सज़ा देने की इस पद्धति का अभ्यास किया था। हालाँकि, इसका उपयोग प्राचीन सीरियाई, रोमन, मैसेडोनियाई और यूनानियों द्वारा किया जाता था। यह सबसे बुरे लोगों पर थोपा गया था, विशेषकर पाखंडी और ईशनिंदा करने वालों पर।

दुर्भाग्य से, दुनिया ने हमेशा उन लोगों को ठोकर खाई है जो इस तरह के बच्चे जैसे विश्वास की तलाश करते हैं। इसलिए येशुआ अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए एक और दृष्टांत का उपयोग करता है। फन्दों के कारण संसार पर हाय! क्योंकि फंदे तो होंगे ही, परन्तु हाय उस पर जो जाल बिछाता है (मती १८:७ सीजेबी)! जाल एक जाल या पिंजरा था जो किसी जानवर को पकड़ने के लिए लगाया जाता था। यहूदी आहार प्रतिबंध ऐसे किसी भी जानवर को खाने की अनुमति नहीं देंगे जिसका खून निकालने के लिए ठीक से वध नहीं

Gh – यदि कोई इन छोटे बच्चों में से किसी एक को ठोकर खिलाता
है मत्ती १८:६-१४; मरकुस ९:३८-५०; लूका ९:४९-५० | 3

किया गया हो। इसलिए, आप किसी कोषेर जानवर का शिकार नहीं कर सकते या उसे गोली नहीं मार सकते। कोषेर जानवर को पकड़ने का एकमात्र तरीका जाल का उपयोग करना था। जबकि जानवर को पकड़ने के लिए गड्ढा खोदना या चारा पिंजरा लगाना एक स्वीकृत प्रथा थी, यह कुछ कपटपूर्ण कार्य करने की भी एक तस्वीर थी। संसार ऐसे जालों और जालों से भरा पड़ा है! यीशु ने यहाँ भी पुष्टि की कि फँदे अवश्य होंगे। शायद हम सीधे तीरों और हमलों से बच सकते हैं, लेकिन हमें छिपे हुए जालों से सावधान रहना चाहिए।

फिर यीशु अपनी बात पर जोर देने के लिए अतिशयोक्ति का प्रयोग करते हैं। इसलिये यदि तेरा हाथ या पांव तेरे लिये फंदा बने, तो उसे काटकर फेंक दे! इससे अच्छा है कि तुम अपंग या अपंग होकर अनन्त जीवन प्राप्त करो, फिर दोनों हाथ और दोनों पैर पकड़कर अनन्त आग में फेंक दिए जाओ (मती १८:८; मरकुस ९:४३ सीजेबी)! प्रभु स्पष्ट रूप से आलंकारिक रूप से बोल रहे हैं, क्योंकि हमारे भौतिक शरीर का कोई भी हिस्सा हमें पाप करने के लिए प्रेरित नहीं करता है, और इसके किसी भी हिस्से को हटाने से हम पाप करने से नहीं बचेंगे। मुद्दा यह था कि एक व्यक्ति को पाप करने से बचने या दूसरों को पाप कराने से रोकने के लिए वह सब कुछ करना चाहिए जो आवश्यक है, चाहे वह कितना भी गंभीर और दर्दनाक क्यों न हो। कोई भी आदत, स्थिति, रिश्ता या कोई भी चीज़ जो आपके लिए फंदा बन जाए उसे हमेशा के लिए छोड़ देना चाहिए। कोई भी चीज़ रखने लायक नहीं है अगर वह किसी भी तरह से पाप की ओर ले जाती है। हालाँकि, यहाँ निहितार्थ यह है कि प्रलोभन और पाप पर विजय के लिए विजय प्राप्त करने वाला अनुग्रह उपलब्ध है।

लेकिन अनन्त जीवन इतना महत्वपूर्ण है कि यदि आपका पैर आपको पाप कराता है, तो उसे काट दें! बेहतर होगा कि आप लंगड़े हो जाएं लेकिन अनंत जीवन प्राप्त करें (देखें Ms– द इटरनल सिक्योरिटी ऑफ द बिलीवर), बजाय इसके कि आप दोनों पैर पकड़कर गी- हिनोम में फेंक दिए जाएं (मार्क ९:४५ सीजेबी)। यह यरूशलेम के बाहर का क्षेत्र था जो बुतपरस्ती और मूर्तिपूजा के क्षेत्र के रूप में कुख्यात था। ईसा मसीह के समय में इसका उपयोग कूड़े के ढेर के रूप में किया जाता था। वह गंधक, कूड़े-कचरे और शवों की गंध से लगातार जल रहा था। यदि किसी शव पर दावा नहीं किया जाता था, तो उसे गी-हिनोम की आग में फेंक दिया जाता था। यूनानियों ने बाद में हिब्रू शब्द का अनुवाद गेहेना में किया, जो अंग्रेजी शब्द हेल में विकसित हुआ। यह देखना आसान है कि कैसे गी-हिनोम दुनिया सबसे दुष्ट जगह और यहां तक कि अधर्मियों के न्याय के भविष्य के स्थान का पर्याय बन गई (यिर्मयाह ७; मती ७)।

इसी प्रकार, तुम्हारे लिए एक आंख के साथ परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना इस से भला है, कि दो आंखें रहते हुए नरक की आग में डाला जाए, जहां उन्हें खाने वाले कीड़े नहीं मरते, और आग नहीं बुझती (मत्ती १८:९; मरकुस ९:४७-४८ सीजेबी)। यशायाह एक नए स्वर्ग और एक नई पृथ्वी के अस्तित्व की शिक्षा देता है (दूसरे पतरस ३:१३ और

Gh – यदि कोई इन छोटे बच्चों में से किसी एक को ठोकर खिलाता
है मत्ती १८:६-१४; मरकुस ९:३८-५०; लूका ९:४९-५० | 4

प्रकाशितवाक्य २१-२२ में पुष्टि की गई है) जिसमें परमेश्वर के लोग बाहर जाएंगे और उन लोगों के शवों को देखेंगे जिन्होंने यहोवा के खिलाफ विद्रोह किया था; जो कीड़े उन्हें खाएंगे वे न मरेंगे, और जो आग उन्हें जलाती है वह बुझेगी नहीं (यशायाह ६६:२४)। जब भौतिक शरीर दब जाते हैं और सड़ने लगते हैं, तो कीड़े उन पर तभी तक हमला कर सकते हैं, जब तक मांस जीवित रहता है। एक बार सेवन करने के बाद, शरीर को कोई नुकसान नहीं हो सकता। लेकिन शापितों के पुनर्जीवित शरीर कभी भी नष्ट नहीं होंगे, और उन्हें खाने वाले नारकीय कीड़े भी कभी नहीं मरेंगे।

इसलिए, बाइबल विनाशवाद की शिक्षा नहीं देती है, जो कहती है कि खोई हुई आत्माएँ शून्य में अस्तित्व में रहेंगी। जो लोग विनाशवाद में विश्वास करते हैं उनका मानना है कि कोई भी व्यक्ति अंतहीन पीड़ा का हकदार नहीं है। विनाशवाद के साथ समस्या यह है कि यह बाइबिल की शिक्षा का खंडन करता है। कई अनुच्छेद दुष्टों की सज़ा की अनंतता पर ज़ोर देते हैं। दोनों अनुबंध अंतहीन या कभी न बुझने वाली आग का उल्लेख करते हैं (यशायाह ६६:२४; मरकुस ९:४३-४८)। इसके अलावा, ऐसे कई मार्ग हैं जहां चिरस्थायी, अनन्त और हमेशा के लिए जैसे शब्द दुष्टों की भविष्य की स्थिति को दर्शाने वाले संज्ञाओं पर लागू होते हैं (यशायाह ३३:१४; दानिय्येल १२:२; मती २५:४६; दूसरा थिस्सलुनीकियों १:९; यहूदा ६ प्रकाशितवाक्य १४:११, २०:१०). मती २५:४६ में पाई गई समानता विशेष रूप से उल्लेखनीय है: यदि एक (जीवन) अनंत अवधि का है, तो दूसरा (सजा) भी होना चाहिए।

इन वचन से सीख स्पष्ट है। अनंत जीवन बहुत शानदार है – इसे पाने के लिए अपनी शक्ति के भीतर सब कुछ करें; हालाँकि, गेहन्ना बहुत भयानक है – इससे बचने के लिए अपनी शक्ति के भीतर सभी प्रयास करें। अंग या आंख निकालना जितना भयानक हो सकता है, आध्यात्मिक पश्चाताप और हृदय परिवर्तन वास्तव में परमेश्वर के पुत्र येशुआ की प्रतीक्षा करने के लिए आवश्यक है, जिसे उन्होंने मृतकों में से उठाया था, स्वर्ग से प्रकट होने और हमें परमेश्वर के फैसले के आसन्न क्रोध से बचाने के लिए (प्रथम थिस्सलुनिकियों १:१० सीजेबी)।

सुनिश्चित करें कि आप कभी भी इन छोटों में से किसी का भी तिरस्कार न करें। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि स्वर्ग में उनके दूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुख निरन्तर देखते रहते हैं (मती १८:१० सीजेबी)। क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं, यह जोरदार है, प्रभु जो कहने वाले हैं उसके महत्व को इंगित करता है। जो लोग जाल बिछाते हैं उनके लिये विशेष न्याय सुरक्षित रखा जाता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह सब ईश्वर की नजर में बच्चों के विशेष स्थान का एक गंभीर बयान है। प्रत्येक व्यक्ति का मूल्यांकन उसके अंदर मौजूद प्रकाश के अनुसार किया जाता है और बच्चे अपने साधारण विश्वास के आधार पर कम जिम्मेदार प्रतीत होते हैं। निहितार्थ यह है कि स्वर्ग में पवित्र स्वर्गदूत कभी भी प्रभु से अपनी नज़रें नहीं हटाते हैं, ऐसा न हो कि वे अपने छोटों की ओर से किए जाने वाले कार्य के संबंध में उनसे कुछ दिशा-निर्देश चूक जाएं।

Gh – यदि कोई इन छोटे बच्चों में से किसी एक को ठोकर खिलाता
है मत्ती १८:६-१४; मरकुस ९:३८-५०; लूका ९:४९-५० | 5

बाइबल यह नहीं सिखाती कि विश्वासियों के पास एक अभिभावक देवदूत है, जैसा कि येशुआ के समय में यहूदी परंपरा सिखाती थी और आज भी कई लोग विश्वास करते हैं और सिखाते हैं। चमत्कारिक ढंग से जेल से रिहा होने के बाद प्रेरितों ने केफा के लिए प्रार्थना करते हुए सोचा कि उनके दरवाजे पर दस्तक उसके स्वर्गदूत की थी (प्रेरितों १२:१५)। लेकिन वह अंधविश्वास केवल प्रेरितों में परिलक्षित होता है। इसे यहां या कहीं और पवित्रशास्त्र में न तो सिखाया गया है और न ही इसकी पुष्टि की गई है।

पवित्र आत्मा सामूहिक अर्थ में बच्चों और उनके स्वर्गदूतों की बात करता है। ये स्वर्गदूत, चाहे एक विशिष्ट समूह हों या स्वर्गदूतों का पूरा समूह, परमेश्वर के छोटों की देखभाल के लिए जिम्मेदार हैं, जो उसके पुत्र में विश्वास करते हैं (मती १८:६)। तथ्य यह है कि एल शादाई अपने बच्चों की देखभाल के बारे में इतना चिंतित है कि उसने अपने स्वर्गदूतों को एक पल की सूचना पर उनकी रक्षा के लिए तैयार रखा है, यह दर्शाता है कि वे उसके लिए कितने मूल्यवान हैं।

मार्क नमक के बारे में कुछ जोड़ता है जब वह कहता है: वास्तव में, हर कोई आग से नमकीन हो जाएगा। नमक उत्तम है, परन्तु यदि इसका नमकीनपन समाप्त हो जाये तो आप इसे कैसे पकायेंगे? इसलिए अपने आप में नमक रखो – यानी एक दूसरे के साथ शांति से रहो (मरकुस ९:४९-५० सीजेबी)। नमक का उपयोग स्वाद बढ़ाने और स्थायित्व उत्पन्न करने वाले परिरक्षक के रूप में किया जाता है (मती ५:१३-१४)। मोशे ने लिखा: यदि आप यहोवा के लिए पहले फल का अन्नबलि लाते हैं, तो आपको अपने पहले फल में से ताज़ी बालियों से आग में सूखी भुनी हुई अनाज की गुठली अन्नबलि के रूप में लानी होगी (लैव्यव्यवस्था २:१३ सीजेबी)। इसलिए शिष्यों के लिए, जिससे यीशु बात कर रहा था, स्वयं जीवित बलिदान होना (रोमियों १२:१-२), और आग से नमकीन होना उचित है। चौकस यहूदी रोटी पर बरखा पढ़ने से पहले उस पर नमक छिड़कते हैं (मत्तीयाहु १४:१९); यह रब्बी द्वारा घर में खाने की मेज़ को मंदिर की वेदी से बराबर करने से पता चलता है (मरकुस ७:२-४; लूका १४:३४-३५)।

रब्बियों ने नमक के बारे में छह बातें सिखाईं जिन्हें यहां प्रेरितों पर लागू किया जा सकता था। सबसे पहले, उन्होंने सिखाया कि दुनिया नमक के बिना जीवित नहीं रह सकती; दूसरे, प्राचीन विश्व में नमक जीवन की एक आवश्यकता थी क्योंकि यह खराब होने से बचाता था और परिरक्षक के रूप में उपयोग किया जाता था; तीसरा, यह आम तौर पर सच है कि नमक अपना नमकीनपन नहीं खोता है। इस वजह से, कुछ लोगों को मार्क ९:५० से समस्या है क्योंकि इसका उपयोग दूसरे मंदिर काल के बलिदानों के लिए किया गया था। मार्क कहते हैं: नमक अच्छा है, लेकिन अगर इसका नमकीनपन खत्म हो जाए, तो आप इसे दोबारा नमकीन कैसे बना सकते हैं? हालाँकि, वह नमक मृत सागर से लिया गया था और वह उग्र हो सकता था और अपना खारापन खो सकता था; चौथा, शिष्य स्वयं अपना नमक जैसा गुण खो सकते हैं और दुनिया की सोच में पड़ सकते हैं; पाँचवाँ, नमक टैल्मिड का एक विशिष्ट चिह्न है, जिसके खो जाने से वह यहोवा के लिए उपयोगिता की दृष्टि

Gh – यदि कोई इन छोटे बच्चों में से किसी एक को ठोकर खिलाता
है मत्ती १८:६-१४; मरकुस ९:३८-५०; लूका ९:४९-५० | 6

से बेकार हो जाएगा; और अंत में, उन्हें अपनी नमक जैसी गुणवत्ता बरकरार रखनी होगी और आपस में शांति से रहना होगा।



यह प्रदर्शित करने के लिए कि परमेश्वर छोटे
बच्चों को कितना महत्व देता है, यीशु ने अपने प्रेरितों को खोई हुई भेड़ का दृष्टांत दिया। आप क्या सोचते हैं? शिक्षकों द्वारा अपने विद्यार्थियों को जो पढ़ाया जा रहा है उस पर ध्यानपूर्वक विचार करने के लिए उपयोग किया जाने वाला एक सामान्य वाक्यांश था। अपनी काल्पनिक कहानी में, यीशु ने पूछा: यदि किसी मनुष्य के पास सौ भेड़ें हों, और उनमें से एक भटक जाए, तो क्या वह निन्यानबे भेड़ों को पहाड़ों पर छोड़कर एक भटकी हुई को ढूंढ़ने न जाएगा (मती १८:१२) ? यह विचार निहित प्रतीत होता है कि चरवाहा अपने झुंड को इतनी अच्छी तरह से जानता था कि उसने पूरे झुंड की जाँच किए बिना भटकती भेड़ों को महसूस कर लिया। चरवाहा प्रत्येक भेड़ को व्यक्तिगत रूप से जानता था (यूहन्ना १०:१-१८), और इसलिए सहज रूप से जानता था कि कब कुछ गलत था या उनमें से एक गायब था। वह तब तक हार नहीं मानता था जब तक कि वह किसी खोई हुई भेड़ को ढूंढ़ न ले और उसे बचा न ले। वफादार चरवाहा भेड़ियों, भालुओं, शेरों, चोरों, या अपनी भेड़ों के लिए किसी भी अन्य खतरे से लड़ेगा। जब कोई भटकती हुई भेड़ मिलती थी, तो चरवाहा किसी भी घाव पर जैतून का तेल डालता था और टूटे हुए पैर को बाँध देता था। फिर वह भेड़ को प्यार से अपने कंधों पर रखता और वापस बाड़े में ले जाता।

यदि एक मानव चरवाहा अपनी देखभाल के तहत प्रत्येक भेड़ के लिए इतनी चिंता दिखा सकता है, तो अनन्त वाचा (इब्रानियों १३:२०) के रक्त के माध्यम से भेड़ों के महान चरवाहे येशुआ हा-मशियाक को कितनी अधिक परवाह होती है जब उसका एक लोग आध्यात्मिक रूप से आश्चर्यचकित हो जाते हैं? और यदि वह उसे पा लेता है, तो उसे अपने पास पुनः स्थापित कर लेता है, तो वह उन निन्यानवे भेड़ों की तुलना में, जो भटक नहीं गई थीं, उस एक भेड़ के लिए अधिक प्रसन्न होता है (मती १८:१३)।

एक अन्य अवसर पर, यीशु ने अविश्वासियों के लिए ईश्वर की चिंता को सिखाने के लिए उसी दृष्टांत का उपयोग किया। उन्होंने समझाया, मैं तुमसे कहता हूं, कि उसी प्रकार स्वर्ग में एक पश्चाताप करने वाले पापी के लिए उन निन्यानवे धर्मियों के लिए, जिन्हें पश्चाताप करने की आवश्यकता नहीं है, अधिक खुशी मनाई जाएगी (लूका

Gh – यदि कोई इन छोटे बच्चों में से किसी एक को ठोकर खिलाता
है मत्ती १८:६-१४; मरकुस ९:३८-५०; लूका ९:४९-५० | 7

१५:७)। भेड़ के लिए एक विशेष खुशी व्यक्त की जाती है, जो इसलिए नहीं पाई जाती है कि इसे दूसरों की तुलना में अधिक महत्व दिया जाता है या प्यार किया जाता है, बल्कि इसलिए कि इसका खतरा, कठिनाई और बड़ी आवश्यकता देखभाल करने वाले चरवाहे की ओर से एक विशेष चिंता पैदा करती है। उसी तरह, जब परिवार में एक बच्चा बीमार होता है, खासकर यदि बच्चा गंभीर रूप से बीमार होता है, तो माँ अन्य बच्चों की तुलना में उस पर अधिक समय और ध्यान देगी। और जब वह बच्चा आखिरकार ठीक हो जाता है, तो वह उन बच्चों के लिए खुशी नहीं मनाती जो हमेशा स्वस्थ रहे हैं, बल्कि उसके लिए खुशी मनाती है जो बीमार और पीड़ित था। और यदि भाई-बहन भी प्रेमपूर्ण हैं, तो वे भी अपने भाई या बहन के ठीक होने पर आनन्द मनाएँगे। चूँकि प्रभु को अपने सभी बच्चों के प्रति इतनी कोमल करुणा है, और उनकी भलाई से उन्हें बहुत खुशी मिलती है, हमें उन विश्वासियों को हमेशा तुच्छ समझने के पवित्र भय में रहना चाहिए जिनकी आभा खत्म हो गई है।

इसी प्रकार तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी नहीं चाहता कि इन छोटों में से कोई भी नाश हो (मत्ती १८:१४)। हालाँकि नाश (ग्रीक: अपोलुमी) आम तौर पर पूर्ण विनाश या यहाँ तक कि मृत्यु का आदर्श रखता है, कभी-कभी, जैसा कि यहाँ है, यह बर्बादी या हानि को संदर्भित करता है जो स्थायी नहीं है। रोमियों १४:१५ में यह शब्द ल्यूपियो के समान है, जिसका अर्थ है पीड़ा या शोक उत्पन्न करना: यदि भोजन के कारण आपके भाई को ठेस पहुँचती है (लुपियो), तो आप अब प्रेम के अनुसार नहीं चल रहे हैं। जिस के लिये मसीह मरा, उसे अपोलुमी को अपने भोजन से नष्ट न करना। जब यीशु नष्ट होने की बात करते हैं, तो वे इसे पवित्रीकरण, या हमारे जीवन के दौरान विश्वासियों के रूप में हमारे आध्यात्मिक विकास से जोड़ते हैं। मसीह नहीं चाहता कि हम थोड़ी देर के लिए भी, आध्यात्मिक रूप से घायल हों। जब हम पाप में गिरते हैं तो यह उसके लिए, चर्च के लिए हमारी उपयोगिता को नष्ट कर देता है, और यह उसके और अन्य विश्वासियों के साथ हमारे सही रिश्ते को कमजोर कर देता है। एक आस्तिक के लिए दूसरे आस्तिक को घायल करना प्रभु की इच्छा पर हमला करना और उसका विरोध करना है। प्रभु सक्रिय रूप से अपने सभी बच्चों की आध्यात्मिक भलाई चाहते हैं, और हमें भी कम नहीं करना चाहिए।